सहज भारतीय राज्य एवं समाजतन्त्रका सजीव उदाहरण : चेङ्गलपट्टु १७७०

समाजनीति समीक्षण केन्द्र चेन्नै

Centre for Policy Studies WWW.CPSINDIA.ORG

चेङ्गलपट्टुका समाज एवं राज्यतन्त्र

आजकी परिस्थितिके परिप्रेक्ष्यमें भारतकी समृद्धि, सबका ध्यान रखने एवं सबका भरण-पोषण करनेकी भारतकी प्रवृत्ति एवं विभिन्न क्षेत्रोंमें भारतीय तकनीकोंकी उत्कृष्टता सुदूर भूतकालके किसी दुरूह आदर्श-सी प्रतीत होती है। परन्तु अंग्रेज़ोंके आनेसे पूर्व तमिलनाडुके चेन्नै नगरके आसपासके चेङ्गलपट्टु क्षेत्रमें भारतीय धारणाओंके अनुरूप सहज भारतीय व्यवस्थाएँ किस प्रकार चलती थीं और उनके माध्यमसे कैसा समृद्ध, संविभाजननिष्ठ एवं उत्कृष्ट तकनीकी दक्षताओंसे सम्पन्न समाज यहाँ बना था, इस विषयमें विशद एवं विस्तृत जानकारी उपलब्ध है। चेङ्गलपट्टु भारतके उन क्षेत्रोंमें से एक है जो सबसे पहले अंग्रेज़ोंके अधिकारमें आये। अठारहवीं शताब्दीके अन्तिम दशकोंमें यहाँकी सहज भारतीय व्यवस्थाओंको छिन्नभिन्न कर अपनी मान्यताओं एवं आवश्यकताओंके अनुरूप एक विदेशीतन्त्र स्थापित करनेसे पूर्व ब्रितानी प्रशासकोंने इस क्षेत्रके प्रायः दो हजार ग्रामोंके सार्वजनिक जीवनके सभी पक्षोंका सर्वेक्षण किया। इस सर्वेक्षणमें संगृहीत जानकारी हमें सुचारू रूपसे चल रही सहज भारतीय राज्य एवं समाज व्यवस्थाके स्वरूपका स्पष्ट चित्र उपलब्ध करवाती है।

हम देख चुके हैं कि भारतीय सभ्यतामें सब जड़-चेतन सृष्टिमें ब्रह्मका अंश देखते हुए सबका समुचित सम्मान करनेका विधान किया गया है। सबकी आवश्यकताओंका ध्यान रखने एवं सबका भरण-पोषण करनेपर बल दिया गया है। प्रकृतिसे प्राप्त सहज सम्पदाका समुचित नियोजन कर प्रयासपूर्वक समृद्धि अर्जित करने और उस समृद्धिका सम्यक् विभाजन करते हुए उपभोग करनेकी शिक्षा दी गई है। कुटुम्ब, जाति, ग्राम एवं सम्प्रदाय जैसे समाजके सहज संघटकोंको अपने-अपने अधिकारक्षेत्रमें आनेवाले सार्वजनिक कार्योंका अपने-अपने पूर्वप्रतिष्ठित धर्मों एवं रीतियोंके अनुरूप सम्यक् सम्पादन करनेकी स्वतन्त्रता एवं उत्तरदायित्व देनेकी व्यवस्था की गई है। चेङ्गलपट्टुक्षेत्रसे सम्बन्धित जानकारी हमें दिखाती है कि कैसे भारतीय सभ्यताकी इन अवधारणाओं, शिक्षाओं एवं कल्पनाओंको समाज एवं राज्यकी विशिष्ट व्यवस्थाओं एवं संस्थानोंके माध्यमसे मूर्त किया जाता था। यह जानकारी हमें बताती है कि कैसे सनातन धर्ममें आश्रित भारतकी सहज सामाजिक व्यवस्थाओं एवं संस्थानोंके माध्यमसे भारतके लोग अठारहवीं शताब्दीके उत्तरार्द्धके अपेक्षाकृत अर्वाचीन कालतक अत्यन्त अनुशासित, समृद्ध एवं परिपूर्ण जीवनयापन करते रहे हैं।

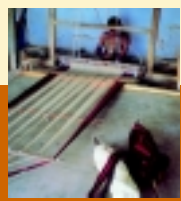

चेङ्गलपट्टुका कृषिबाहुल्य

अठारहवीं शताब्दीके उत्तरार्द्धमें चेङ्गलपट्टुके ग्रामोंमें प्रत्येक कुटुम्बके लिये प्रायः पाँच टन अनाजका वार्षिक उत्पादन होता था। उपलब्ध अभिलेखोंके अनुसार आजके समान तब भी चेङ्गलपट्टुके कुटुम्बमें ४-५ सदस्य हुआ करते थे। पाँच सदस्योंके कुटुम्बके लिये पाँच टन अनाजकी वार्षिक उपज आजके समृद्धतम विश्वके स्तरके तुल्य है। आजके भारतमें तो पाँच व्यक्तियोंके कुटुम्बके लिये एक टन अनाजकी माध्य वार्षिक उपलब्धि भी कठिनाईसे हो पाती है।

इतनी प्रचुर मात्रामें अनाजका उत्पादन एवं उपभोग किसी ऐसे समाजमें ही सम्भव है जहाँ पशुधन बड़ी संख्यामें उपलब्ध हो और जहाँ पशुओंका समुचित पोषण होता हो। चेङ्गलपट्टुके प्रत्येक कुटुम्बमें प्रायः तीन पशु हुआ करते थे। आज भारतमें पशुओंकी संख्या प्रति कुटुम्ब एकसे अधिक नहीं बैठती। और भारतवर्षमें आज अनाजका जो अपेक्षाकृत अल्प उत्पादन होता है उसमें पशुओं का भाग नगण्य ही है।

चेङ्गलपट्टुकी उच्च कृषि दक्षता एवं तकनीक

चेङ्गलपट्टु दक्षिणके पूर्वी तटीय क्षेत्रमें स्थित है। इस क्षेत्रकी सहज उर्वरता नदियों द्वारा लाई गई मृदासे बने भारतके विख्यात मैदानों जैसी नहीं है। अठारहवीं शताब्दीके उत्तरार्द्धके जिस समयकी जानकारी इस सर्वेक्षणमें संकलित है, उस समय अंग्रेजी और फ्रांसीसी सेनाएँ इस क्षेत्रको रौंदती हुई घूम रही थीं। अतः क्षेत्रकी आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था असन्तुलित थी। ऐसे समयमें चेङ्गलपट्टुके कृषक अपनी भूमिपर ढाई टन प्रति हेक्टेयरकी माध्य वार्षिक उपज प्राप्त कर रहे थे। इनमें से प्रायः साठ अपेक्षाकृत अधिक उर्वर और जलसम्पन्न ग्रामोंका माध्य वार्षिक उत्पादन साढ़े चार टन प्रति हेक्टेयर था। ये ग्राम पर्याप्त बड़े थे, चेङ्गलपेट्टुके कुल कृषिक्षेत्रका छठवाँ भाग इन साठेक ग्रामोंमें पड़ता था और क्षेत्रकी कुल उपजका एक तिहाई इनसे आता था। इनमें कतिपय ग्राम बहुत बड़े और बहुत उर्वर थे। इन गिनेचुने ग्रामोंका वार्षिक उत्पादन नौ टन प्रतिहेक्टेयरतक पहुँचता था। इतना वार्षिक उत्पादन आजकी उच्चतम तकनीकोंसे पृथिवीके अत्यन्त उर्वर कतिपय क्षेत्रोंमें ही सम्भव हो पाता है।

पूर्वकालमें इस स्तरका उत्पादन पानेवाले समाजमें कृषिसम्बन्धी सब विधाएँ एवं तकनीकें निश्चय ही परिष्कारके चरमपर रही होंगी। चेङ्गलपट्टुके समाजकी विभिन्न विधाओंमें तकनीकी दक्षताका सबसे अच्छा उदाहरण वहाँकी 'एरी' तालोंपर आधारित सिञ्चाई व्यवस्थामें मिलता है। यह तटीय क्षेत्र समुद्रकी ओर तीखी ढलान लिये हुए है। यहाँ पड़नेवाला जल किसी अन्य व्यवस्थाके अभावमें तुरन्त समुद्रमें बह जाता है। चेङ्गलपट्टुके लोगोंने इस ढलानी क्षेत्रमें एक दूसरेसे सम्बद्ध तालोंकी ऐसी शृङ्खलाबद्ध प्रणाली स्थापित की है कि समुद्रकी ओर बहनेसे पूर्व वर्षाका जल उनकी भूमिपर तनिक रुकते हुए उनके खेतोंको सिञ्चित करता जाता है। चेङ्गलपट्टुके विस्तृत मानचित्रोंपर एरियोंका नीला रंग छिटका हुआ दिखता है। इस क्षेत्रकी भूमिका प्रायः छठा भाग विभिन्न प्रकारके जलाशयोंसे आच्छादित है। इस विषयके अध्येताओंका मानना है कि जब ये सब जलाशय जलसे परिपूर्ण हुआ करते होंगे तो पूरे क्षेत्रमें उच्च आर्द्रताका वातावरण व्याप्त रहता होगा। चेङ्गलपट्टुके अनेक ग्रामोंकी अत्युच्च कृषि-उपजका रहस्य कदाचित् इस सिक्त वातावरणमें ही निहित है।

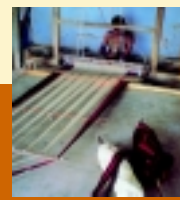

चेङ्गलपट्टुकी औद्योगिक समृद्धि

अंग्रेज़ोंके आनेसे पूर्वके समस्त भारतके समान ही चेङ्गलपट्टु भी केवल कृषिपर निर्भर समाज नही था। औद्योगिक उत्पादनका महत्त्व इस समाजमें अल्प नहीं था। इस क्षेत्रके ७० सहस्र कुटुम्बोंमें मात्र आधे ही सर्वथा कृषिपर निर्भर थे। शेष आधे कुटुम्बोंमें से २० प्रतिशतसे अधिक औद्योगिक उत्पादनमें संलग्न थे। प्रायः साढ़े छः प्रतिशत कुटुम्ब तो बुनकरोंके ही थे। इनके अतिरिक्त लोहारों, पत्थरका काम करनेवाले राजों, कुम्हारों, बढ़इयों, रूईका परिष्कार करनेवाले धुनियों, चर्मकारों, तेलियों, लोहा गलानेवाले एवं अन्य धातुकारों आदिके अनेक कुटुम्ब प्रत्येक ग्राममें होते थे। सूतकी कताईके प्रमुख औद्योगिक कार्यमें तो समस्त कुटुम्ब भाग लेते थे। सर्वथा कृषिपर निर्भर कृषकोंके कुटुम्बोंमें भी कताई तो की ही जाती थी।

चेङ्गलपट्टु क्षेत्रके प्रायः एक तिहाई कुटुम्ब उन कार्योंमें लगे थे जिन्हें आजकल सेवाक्षेत्रके कार्य कहा जाता है। प्रत्येक ग्राममें ऐसे कार्योंका सम्पादन करनेवाले कुछ कुटुम्ब हुआ करते थे। चेङ्गलपट्टुके ग्रामोंको प्राप्त सेवाओंकी सूचि पर्याप्त लम्बी है। इनमें प्रशासनिक सेवाओंसे सम्बन्धित ग्रामके लेखाकार जिन्हें 'कणक्कपिल्लै' कहा जाता था और धानकी तुलाई करनेवाले 'अलवुक्कारन्' थे। ग्राम एवं क्षेत्रकी सुरक्षाके लिये उत्तरदायी 'पालयक्कारर' एवं 'टुकड़ी' थे। एरियोंका रखरखाव और उनके जलके समुचित विभाजनकी व्यवस्था करनेवाले 'वेट्टी' थे। विभिन्न प्रकारकी सांस्कृतिक सेवाएँ उपलब्ध करवानेके लिये मन्दिरोंके परिचारकों, पाठशालाओंके अध्यापकों, संगीतकारों और नर्तकों आदिके कुटुम्ब थे। शौच एवं स्वास्थ्य सेवाओंके लिये नापितों, धोबियों एवं चिकित्सकोंके कुटुम्ब थे। और ग्रामसमाजके बौद्धिक परितोषके लिये उच्च अध्येताओं एवं पूज्य आचार्योंकी सेवाएँ उपलब्ध थीं।

चेङ्गलपट्टुका संविभाजनपर आधारित समाज

चेङ्गलपट्टुकी समाज एवं राज व्यवस्था संविभाजनकी अवधारणापर ही आधारित थी। पृथिवीसे प्रयासपूर्वक समृद्धि अर्जित करना और इस समृद्धिका ऐसा व्यापक संविभाजन करना कि ग्राम एवं क्षेत्रके समस्त कुटुम्बों और संस्थानोंका सम्यक् भरण होता रहे, यह भारतीय विधान चेङ्गलपट्टुकी सामाजिक, राजनैतिक, नैतिक एवं आर्थिक व्यवस्थाओंका आधार था। चेङ्गलपट्टुके समाजमें इन व्यवस्थाओंको स्थापित करनेका मुख्य उपकरण भी संविभाजनकी यह प्रक्रिया ही थी।

चेङ्गलपट्टुके ग्रामोंमें अनाजकी कटाई-गहाईके साथ ही संविभाजनका एक विस्तृत क्रम प्रारम्भ हो जाता था। प्रशासनिक, सैनिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, बौद्धिक एवं शौच-स्वास्थ्य सम्बन्धी सेवाओंका सम्पादन करनेवाले समस्त कुटुम्ब एवं संस्थान इस संविभाजनके माध्यमसे अपना भागांश प्राप्त करते थे। अधिकतर कुटुम्बों एवं संस्थानोंका तो मात्र अपने ही ग्रामके उत्पादनमें भाग हुआ करता था। परन्तु किन्हीं एक या दो ग्रामोंसे अधिक व्यापक क्षेत्रसे सम्बन्धित बड़े-बड़े मन्दिर, बड़े सेनाप्रमुख, उत्कृष्ट संगीतकार एवं नर्तक और उच्च विद्वान् सैंकड़ों ग्रामोंकी उपजमें भाग पाते थे।

इस संविभाजनमें विभिन्न कुटुम्बों एवं संस्थाओंके लिये निकाला जानेवाला भाग मात्र सांकेतिक नहीं था। किसी ग्रामकी उपजका प्रायः एक तिहाई अंश इस प्रक्रियामें विभाजित हो जाता था। विभिन्न कुटुम्बों एवं संस्थाओंका भाग इतना होता था कि उन सबका सम्यक् भरण हो पाये और उनके द्वारा सम्पादित सेवाओंके लिये सम्यक् साधन उपलब्ध रहें। संविभाजनकी यह प्रक्रिया वस्तुतः आधुनिक राज्यकी 'बजट' प्रक्रियाके समकक्ष थी। इस संविभाजनसे प्रत्येक ग्राम अपने सार्वजनिक जीवनके वहनके लिये आवश्यक सब प्रकारकी संस्थाओं और सेवाओंके लिये समुचित साधनोंका नियोजन करता था और साथ ही ग्रामकी सीमाओंसे परेके बड़े क्षेत्रतक व्याप्त वृहत्तर व्यवस्थाओंके वहनमें अपना अंशदान जोड़ता था। इस प्रकार ग्राम सहज भारतीय सार्वजनिक तन्त्रकी मूल इकाई ही नहीं उस तन्त्रका कर्ता भी था। ग्रामोंके अंशदानसे ही समस्त तन्त्र संगठित होता था और इस अंशदानसे ही इस तन्त्रकी विभिन्न संस्थाओं एवं व्यवस्थाओंका वहन होता था।

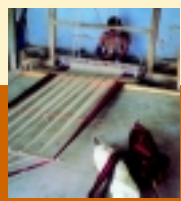

चेङ्गलपट्टुमें ग्रामसमाज ही सम्प्रभु था

ग्रामसमाज चेङ्गलपट्टुके सार्वजनिक तन्त्रका मूल संघटक और इसका मूल कर्ता था। और ग्रामसमाजके संघटक वहाँके कुटुम्बों, जातियों एवं सम्प्रदायों जैसे सहज सामाजिक समूह थे। संविभाजनकी व्यवस्था इस सार्वजनिक तन्त्रमें किसी संस्था अथवा समूहको वैधता प्रदान करनेका मुख्य उपकरण थी। संविभाजनकी जिस विस्तृत व्यवस्थाका उल्लेख हम करते आये हैं उसमें किसी व्यक्ति अथवा किसी अकेले कुटुम्बका कोई स्थान नहीं था। विभिन्न संस्थाओं एवं कार्योंके लिये भागांश निकालनेवाला कोई एक कृषक नहीं अपितु समस्त ग्राम समाज होता था। और जिनके लिये भागांश निकाला जाता था वह कोई एक व्यक्ति अथवा कुटुम्ब नहीं अपितु किसी विशिष्ट सार्वजनिक कार्यके लिये उत्तरदायी संस्थाएँ एवं समुदाय हुआ करते थे। उदाहरणतः ग्रामकी सकल उपजसे नापितके कार्यके लिये भाग निकलता था, यह भाग ग्रामके विभिन्न नापित कुटुम्बोंमें कैसे विभाजित हो, इसका विवेक तो ग्रामके नापित समुदायको ही प्राप्त था।

ऐसा प्रतीत होता है कि संविभाजनकी यह व्यवस्था चेङ्गलपट्टुके सार्वजनिक तन्त्रमें ग्राम समाज एवं विभिन्न सहज समुदायोंको अपने-अपने कार्यक्षेत्रमें सम्प्रभु ही बना दे रही थी। सम्प्रभुताको अनेक स्तरों एवं अनेक समुदायोंमें संविभाजित किये रखना आदर्श भारतीय राज्यव्यवस्थामें सर्वदा अभीष्ट रहा है। भारतमें सदा यह माना जाता रहा है कि रामराज्यमें सम्प्रभुतामें भाग रखनेवाले 'राजकुल' शतगुण संवृद्ध होते हैं। सम्प्रभुतामें भाग रखनेवाले अनेक संघटकोंको प्रस्फुटित-प्रफुल्लितहोनेका अवसर मिलता है। *राजवंशाञ्छतगुणान् स्थापयिष्यति राघवः*।

उपभोगसे पूर्व संविभाग करने, सृष्टिमें सबके भरणपोषणकी व्यवस्था करने और समाजके समस्त सहज संघटकोंको अपने-अपने कार्यक्षेत्रमें अपना-अपना कार्य करनेका उत्तरदायित्व एवं गौरव देनेके भारतीय विधानको चेङ्गलपट्टुमें इस प्रकार साकार किया गया था।

ग्रामों एवं समुदायोंकी राजधानी – तिरुप्पोरूर

चेन्नैसे महाबलिपुरम् जानेवाले प्राचीन मार्गपर एक विशाल चौकोर सरोवरके तटपर स्थित एक अत्यन्त भव्य मन्दिर दिखाई देता है। सरोवर एवं मन्दिरकी भव्यता ऐसी है कि इस मार्गसे पहली बार निकलनेवाला कोई व्यक्ति इसे देखकर स्तब्ध-सा रह जाता है।

यह तिरुप्पोरूरके कन्दसामी कार्तिकेयका मन्दिर है। आज तिरुप्पोरूर छोटा-सा एक नगर है। अठारहवीं शताब्दीमें यह इस क्षेत्रके प्रमुख नगरोंमें से एक था। क्षेत्रके २५० ग्रामोंकी उपजमें कन्दसामी मन्दिरका भाग होता था। क्षेत्रके ४६ समुदायोंके मठ यहाँ थे। ये मठ उच्च विद्या एवं शिक्षाके संस्थान हुआ करते थे। मन्दिरसे विभिन्न समुदायोंके लिये निश्चित किये गये सम्मानसूचक अनुष्ठान इन मठोंके माध्यमसे ही सम्पन्न होते थे। मठोंमें अपने-अपने समुदायके तीर्थयात्रियोंके ठहरने और विविध अनुष्ठानोंका सम्पादन करवानेका प्रबन्ध होता था। इस प्रकार ये मठ अपने क्षेत्रके इस राजधानी नगरमें विभिन्न स्थानीय समुदायोंके दूतावासों जैसे ही थे। ये मठ मन्दिरके चारों ओरकी चार वीथियोंमें स्थित थे। इन मठोंके साथ मन्दिरका विशाल परिसर किसी राजधानीक्षेत्र जैसा ही दिखाई देता होगा।

चेङ्गलपट्टु क्षेत्रके ग्राम एवं समुदाय तिरुप्पोरूरके कन्दसामी मन्दिर जैसे संस्थानोंके माध्यमसे ही एक दूसरेके साथ सम्बद्ध होकर वृहद्स्तरीय राज एवं समाज तन्त्रकी संरचना करते थे। इस प्रकारके संस्थानोंमें एकत्र होते हुए वे उत्कृष्ट वास्तुशिल्प एवं उच्च संस्कृतिके अभ्युदयकी व्यवस्था भी करते थे। तिरुप्पोरूर मन्दिर और तिरुप्पोरूर नगरकी सुनियोजित वीथियाँ ऐसे उच्च वास्तुशिल्प एवं संस्कृतिका अत्यन्त भव्य एवं जीवन्त उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

चेङ्गलपट्टुके प्रायः दो सहस्र ग्रामोंमें सौसे अधिक ऐसे होंगे जहाँ तिरुप्पोरूर जैसे भव्य एवं विशाल मन्दिर थे। इनमें से कतिपय मन्दिर आज भी अपनी सम्पूर्ण भव्यताके साथ विद्यमान हैं, अन्योंके अत्यन्त भव्य भग्नावशेष क्षेत्रके गाँवों में यत्रतत्र दिखाई दे जाते हैं।

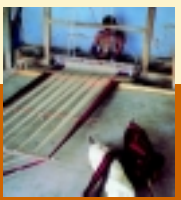

सहज भारतीय राज्य एवं समाजतन्त्रका सजीव उदाहरण: चेङ्गलपट्टु १७७०

सहज भारतीय राज्य एवं समाजतन्त्रका सजीव उदाहरण: चेङ्गलपट्टु १७७०